✺ 4 जून 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] याद से ही सुख मिलता है। यह भी बुद्धि में याद रहे, हम शिवालय में बैठे है तो भी खुशी होगी। जाना तो आखरीन सभी को शिवालय में है। शान्तिधाम में कोई को बैठ नहीं जाना है। वास्तव में शान्तिधाम को भी शिवालय कहेंगे, सुखधाम को भी शिवालय कहेंगे।

2] बाप बैठ सिखलाते है। यहाँ बहुत सावधान होकर बैठना चाहिए। बाबा 15 मिनट शान्ति में बिठाते हैं। तुम तो घण्टा दो घण्टा बैठते हो। सब तो महारथी नहीं हैं। चो कच्चे हैं, उनको सावधान करना है। सावधान करने से सुज़ाग हो जायेंगे। जो याद में नहीं रहते, व्यर्थ ख्यालात चलाते रहते हैं, वह जैसे विघ्न डालते हैं क्योंकि बुद्धि कहाँ न कहाँ भटकती है। महारथी, घोड़ेसवार, प्यादे सब बैठे है।

3] अच्छी-अच्छी जो बच्चियां होंगी वह कहेंगी कि इन 4-5 सौ रूपयों के लिए क्यों हम मुफ्त अपना टाइम बरबाद करें। फिर शिवालय में हम क्या पद पायेंगे ! बाबा देखते हैं कुमारियां तो फ्री है। भल कितना भी बड़ा पगार हो, तो भी यह तो जैसे मुट्ठी में चने हैं, यह सब खलास हो जायेंगे।

4] जो धर्म स्थापन करने वाले हैं उनको सत्गुरू नहीं कह सकते। यह बड़ी भूल है। सत्गुरू तो एक ही है, बाकी गुरू कहलाने वाले तो ढेर हैं। कोई ने कारपेन्टर का काम सिखाया, इन्जीनियर का काम सिखाया तो वह भी गुरू हो गया। हर एक सिखालाने वाला गुरू होता है, सत्गुरू एक ही है।

✺ योग-

1] तुम बच्चों को बाप घड़ी-घड़ी कहते हैं– बच्चे, मनमनाभव। भिन्न-भिन्न प्रकार कीय युक्तियां भी बतलाते हैं। यहाँ बैठे हो, बुद्धि में यह याद करो कि हम पहले शान्तिधाम, शिवालय में जायेंगे फिर सुखधाम में आयेंगे। ऐसा याद करने से पाप कटते जायेंगे। जितना तुम याद करते हो उतना कदम बढ़ाते हो।

✺ धारणा-

1] मीठे बच्चे– अब चने मुट्ठी के पीछे अपना समय बरबाद नहीं करो, अब बाप के मददगार बन बाप का नाम बाला करो। *(विशेष कुमारियों प्रति)*

2] अभी तुम संगम पर बैठे हो। शान्तिधाम और सुखधाम के सिवाए और किसकी भी याद नहीं होनी चाहिए। भल कहाँ भी बैठे हो, धन्धे आदि में बैठे हो तो भी बुद्धि में दोनों शिवालय याद आने चाहिए। दु:खधाम भूल जाना है।

3] हम अच्छी रीति पढ़कर पद तो अच्छा पायें। अच्छे स्टूडेन्ट जो होते हैं, वह पढ़ाई पर ध्यान देते हैं– हम पास विद् आनर हो जायें। उनको ही फिर स्कॉलरशिप मिलती है। जितना पुरूषार्थ करेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे, वह भी 21 जन्म लिए।

✺ सेवा-

1] म्युज़ियम में अथवा प्रर्दशनी में तुम बच्चे जो शिवालय, वेश्यालय और पुरूषोत्तम संगमयुग तीनों ही बताते हो, यह बहुत अच्छा है समझाने के लिए। यह बहुत बड़े-बड़े बनाने चाहिए। सबसे अच्छा बड़ा हाल इनके लिए होना चाहिए, जो मनुष्यों की बुद्धि में झट बैठे। बच्चों का विचार चलना चाहिए कि इसमें हम इम्प्रूवमेंट कैसे लायें।

2] जो जितना हो सके अच्छी रीति समझाना चाहिए। जो सर्विस में रहते हैं उन्हों को सर्विस बढ़ाने का ख्याल करना है। प्रोजेक्टर, प्रदर्शनी में इतना मज़ा नहीं है, जितना म्युज़ियम में। प्रोजेक्टर से तो कुछ तो समझते नहीं। सबसे अच्छा है म्युज़ियम, भल छोटा हो। एक कमरे में तो यह शिवालय, वेश्यालय और पुरूषोत्तम संगमयुग का सीन हो। समझाने में बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए।

3] कुमारियों के लिए तो बहुत सहज है, कोई भी आये तो उनको समझाओ कि बाप हमको यह बादशाही देते हैं। तो बादशाही लेनी चाहिए ना। अभी तुम्हारी मुट्ठी हीरों से भर रही है। बाकी और तो सब विनाश हो जायेंगे।